कपास नई खोज़

भा.कृ.अनु.प. - केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान द्वारा प्रकाशित साप्ताहिक संवाद-पत्र

देखें: www.cicr.org.in

अंक: 1 खंड: 8 अगस्त 3–9, 2014

बैठकों

केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान,नागपुर में दि. 05/08/2014 को अखिल भारतीय समन्वित कपास सुधार परियोजन के तत्वावधान में "कपास पर्णकुंचन वाईरस के लिए जांच एवं मूल्यांकन" विषय पर एक बैठक आयोजित की गई थी । सार्वजनिक और निजी क्षेत्र के लगभग 26 प्रतिभागियों ने भाग लिया । कोहिनूर बीज, अंकुर बीज, माहिको, गंगा कावेरी, कृषिधन बीज, जे. के. बीज, बायर फसल विज्ञान, जैव बीज,रासी बीज, नुझिवीड् बीज आदि उनके अधिकारियों द्वारा प्रतिनिधित्व कर रहे थे । डॉ.सिवाच (हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय), डॉ.पंकज राठौड़ (पंजाब कृषि विश्वविद्यालय), डॉ. अ.हि.प्रकाश (परियोजना समन्वयक एवं अध्यक्ष), डॉ. संध्या क्रांति (कपास अनुसंधान संस्थान), डॉ.चिन्न बाबू (केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान), डॉ.प्रदीप कुमार (राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय) और डॉ. आर.के.अरोरा (पंजाब कृषि विश्वविद्यालय) भी उपस्थित थे । बैठक डॉ.सी.डी.माई की अध्यक्षता में की गयी जबकि डॉ. के.आर.क्रांति, निदेशक, केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान ने सभा का स्वागत किया। डॉ. ऋशिकुमार की पर्णकुंचन जाँच की प्रक्रिया की स्थिति के प्रस्तुति के बाद डॉ. सी.डी.माई ने परिचयात्मक टिप्पणी दिया । इसके बाद पर्णकुंचन जाँच कार्यप्रणाली पर विस्तृत चर्चा हुई । डॉ.के.आर.क्रांति की अध्यक्षता में इस वर्ष के लिए एक निगरानी टीम गठित किया गया था ।

वैज्ञानिक वार्ताएँ

डॉ. ए.मणिकंडन, वैज्ञानिक (मृदा विज्ञान) फसल उत्पादन विभाग, कें.क.अ.सं, नागपुर ने अभिनव सेल के तत्वावधान में दि. 8 अगस्त 2014 को "बायो-चार (जैव-झुलसाना) के अतिरिक्त" संबंधित एक लीक से हटकर विचार प्रस्तुत किया । पिछले तीन (3) दशकों में भारतीय मिट्टी में पोषक तत्व के महत्व की स्थिति एवं बहु-पोषक तत्व की कमी की बढ़ती प्रवृत्ति के संबंधित जानकारी साझा ।

इसके अलावा उन्होंने वर्षा आधारित खेती की सीमाओं के बारे में संक्षिप्त विवरण दिया। उनके द्वारा कपास उत्पादन में वर्षा आधारित खेती के लाभ को बढ़ाने के क्रम में एवं उर्वरक लागत को कम करने के लिए जैव द्रव्यमान आधारित बायोचार के उपयोग पोषक संसेचन के साथ सुझाव दिया गया । जैव द्रव्यमान एकल नवीकरणीय स्वच्छ ऊर्जा स्रोत है और इसके उपलबधता वैश्विक स्तर पर लगभग 14 प्रतिशत है और भारत में 32 प्रतिशत है ।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अनुसार फसल के अवशेष (सी.आर) की उपलब्धता 500-550 टन की है एवं लगभग 90-140 टन स्थानांतरण या भारी कमी खेती के रूप में जला दिया गया है । बायो चार पायरोलिसिस (ताप संबंधी) के माध्यम से ऑक्सीजन की अभाव या सीमित उपस्थिति के तहत उत्पादन किया गया है और उनके गुणों चारा के प्रकार और पायरोलिटिक शर्तों (नमी, तापमान) का कार्य करना है । अत्यधिक स्थिर खुशबूदार रूपों के जैविक कार्बन (80-95 प्रतिशत)अर्थात बायोचार उत्पादित किए जा रहे हैं और यह संरचित (एस) ट्यूबलर या (टी) प्रतिबंधित (आर) के माध्यम से अत्यधिक जैव द्रव्यमान और इसी तरह के भौतिक गुणों की तुलना में, रासायनिक गुणों के आधार पर भेदभाव किया जाता सूक्ष्म और मिसोपोर्स है ।बायो चार का इतिहास पारंपरिक उपयोग दर और लाभ का सविस्तार हुआ । मिट्टी में इसके प्रयोग जैसे कार्बन सिक्वेसट्रेट उपकरण, जैव ऊर्जा, बढ़ाया मिट्टी की उर्वरता और कचरा प्रबंधन के रूप में लाभ प्रदान करता है । उन्होंने इस उर्वरक संश्लेषण प्रक्रिया बायो चार के महीन पाउडर के रूप में और तीन तरीकों से जोड़ा पोषक तत्व जैसे निमज्जन, सन्निवेशन और अंतर्वेशन को विस्तार से कहा एवं इस नूतन उर्वरक उपयोग से कपास के पोषक तत्व उपयोग के दक्षता में सुधार का भी विवरण दिया। गढ़ा हुआ उर्वरक, धीमी और स्थिर निरंतर पोषक तत्वों की रिहाई और पोषक तत्व उपयोग के दक्षता में वृद्धि प्रधान करता है ।

वैज्ञानिक वार्ताएँ

डॉ.एम.वेणुगोपालन, प्रधान, परियोजना निगरानी मूल्यांकन, के.क.अ.सं., नागपुर ने परियोजना निगरानी मूल्यांकन और संबंधित विषयों पर भाषण दिया और आर.पी.एफ.के शब्दावलियों के संबंधित विवरण किया।

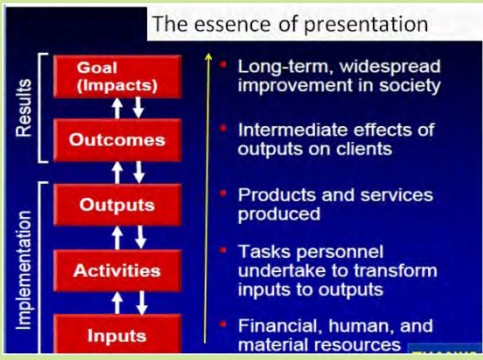

बैठक में सहभागिता

डॉ. के.आर.क्रांति, निदेशक केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर, डॉ. एम.वी.वेणुगोपालन, प्रधान, परियोजना निगरानी मूल्यांकन एवं डॉ. विनिता घोटमारे, प्रधान वैज्ञानिक ने संयुक्त सचिव (कपास) वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार के साथ, वस्त्र आयुक्त निश्ता भवन (नई सी.जी.ओ.भवन) मुंबई के कार्यालय में 4 अगस्त 2014 को रंगीन कपास पर हुई बैठक में भाग लिया ।

स्काउट्स के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम

केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र, सिर्सा में एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम दि. 31.7.2014 को ऑनलाइन कीट प्रबंधन निगरानी और सलाहकार सेवाएं, राष्ट्रीय समन्वित कीट प्रबंधन केन्द्र के नव लगे कार्यकर्ताओं के लिए आयोजित किया गया था। ओपमास परियोजना के कर्मचारियों इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिए । डॉ. ऋशिकुमार, कीटविज्ञानी ने ओ.प.मा.स. की कार्य योजना के बारे में राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन (एन.एफ.एस.एम) (वाणिज्यिक फसलों कपास) के तहत विस्तार से चर्चा की । कीटों का आँकडा, गांवों के चयन, किसानों का चयन और संकर की अभिलेखबद्ध करने के प्रपत्र के संबंध में भी विस्तार से चर्चा की गई । अपने संबोधन में डॉ मोंगा ने कपास की खेती में लगे हुए किसानों को सलाहकार के इस डेटा जारी करने के महत्व को बल दिया । डॉ मोंगा ने कपास पर्णकुंचन वायरस रोग में लिए गये डेटा को अपनाया गांवों जैसे सिर्सा और फतेहाबाद में प्रमुखता से उगाया संकर में भी अभिलिखित करने का सुझाव दिया । श्री.जितेंदर नैन, वरिष्ठ अनुसंधान साथी (ओ.प.मा.स) किसानों के लिए क्षेत्र परिस्थितियों के अधीन डेटा की अभिलिखित प्रदर्शित किया।

उच्च घणत्व रोपण प्रणाली प्रदर्शित क्षेत्रों में दौरा करना

डॉ. दिलीप मोंगा, प्रधान, केंद्रीय, कपास अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र, सिर्सा और डॉ.ऋशि कुमार, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने दि. 30.7.2014 को प्रदर्शन गांवों मोटा पन्निवाला और कारामगार में एच.डी.पा.एस. (उच्च घनत्व रोपण प्रणाली) प्रदर्शन पर दौरा किया । किसानों को आर्थिक उच्चतम सीमा स्तर पार करते समय गिराड के लिए छिडकाव करने का सलाह दिया गया था ।

निर्मित एवं प्रकाशित: डॉ. के.आर.क्रांति, निदेशक, के.क.अ.सं, नागपुर
प्रमुख संपादक: डॉ. नंदिनी गोक्टे-नार्खडेकर
संपादकों: डॉ. जे.एन्नि शीबा, डॉ. विश्लेष नगरारे, डॉ. जे.अमुदा एवं डॉ. एम.शरवणन
जनसंचार माध्यम समर्थन एवं रुपांकन: डॉ. एम.सबेष एवं श्री. एस.सत्यकुमार
हिन्दी अनुवाद: श्रीमति. के.सुभश्री एवं डॉ. अ.हि.प्रकाश
निर्मित समर्थन: श्री. संजय कुश्वाहा

प्रकाशन टिप्पणी: यह समाचार पत्र आनलाईन http://www.cicr.org.in/News Letter.html में उपलब्ध है।
कपास नई खोज एक खुला उपयोग कपास समाचार पत्र है ।

कपास नई खोज - के.क.अ.सं, समाचार पत्र केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर द्वारा प्रकाशित साप्ताहिक संवाद-पत्र.
कार्यालय: पांजरी, एल.पी.जी. बॉटलिंग प्लॉन्ट के पास, वर्धा रॉड, नागपुर- 441 108.
दूरभाष: 07103-275536 फैक्स: 07103-275529; E-mail: cicrnagpur@gmail.com